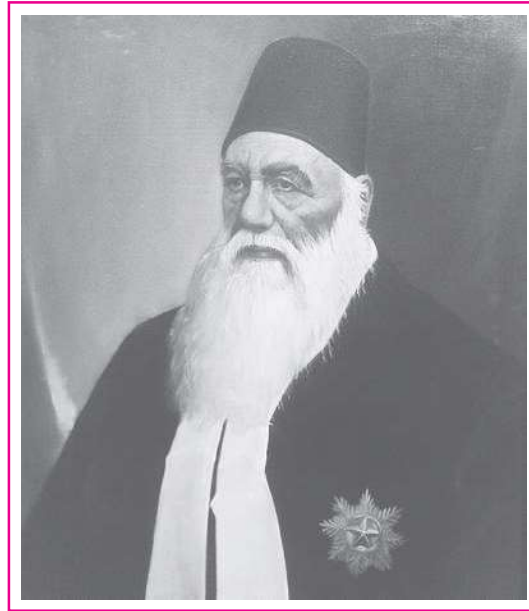




पाठ-आठ

सर सैयद अहम्मद



सर सैयद अहम्मद केवल भारत के नहीं वरन् सारे विश्व के मुसलमान परिवारों के लिए मर्यादा का बुत हैं। ऐसे इन्सान के पैदा होने से भारत में तो चार चाँद लग गए। के अपने माँ-बाप के प्रति यक्रीन रखते थे और अपने वतन पर विश्वास के साथ चाहत रखते थे। अपने कौम से प्यार कर काम करने वाले व्यक्ति के साथ चाहत रखते थे। अपने कौम से प्यार कर काम करनेवाला व्यक्ति हिन्दुस्तान में एक मिसाल जैसा था। उनका जन्म दिल्ली शहर में सन् 1817 को हुआ था। उस समय मुसलमान परिवारों में शिक्षा प्राप्त करनेवाले व्यक्ति बहुत कम थे।

सर सैयद अहम्मद ने पढ़-लिखकर दिल्ली के जिलाधीश के दफ्तर में पंजीयक के पद में काम किया। उनकी जानकारी तथा होशियारी की वजह से उनको बीजापुर के उप-न्यायाधीश के पद में नियुक्त किया गया।

उस समय भारत में व्यापक रूप से सैन्यबगावत चल रही थी। उन्होंने बीजापुर में रह रहे बेसहारे, बेकसूर अंग्रेज स्त्री-पुरुषों तथा बाल-बच्चों को आतंकवादियों के हाथ से बचाया। इस वजह से उनको क्रांतिकारियों ने जान से मार डालने की कोशिश की। बगावत खत्म होने के बाद उनको सरकार की ओर से बख्शीश दी गई। सरकार ने उनको और उनकी पहली औलाद को मासिक पेंसन दो सौ रुपए दिए।

उस वक्त भारत के मुसलमानों की हालत बहुत नाजुक थी। अधिकांश मुसलमान लोग प्रथा के अनुसार पढ़े-लिखे नहीं थे। स्त्रियों की जुबान में तो तालिम का नाम ही नहीं था। उन्होंने समझा कि ये सब तालिम की कम जानकारी से हुआ था। अतः उन्होंने पाठशालाएँ, मदरसे, कॉलेजों की स्थापना की। उन्होंने धन, मान, इज्जत, कोशिशें आदि लोगों को शिक्षा देने में लगा दी।

पहले उनको अंग्रेजी की जानकारी नहीं थी। आखिर उनकी चाहत और अथक कोशिशों की वजह से बाद में उन्होंने अंग्रेजी भाषा में पुस्तकें लिखना शुरू किया। उनकी पुस्तक 'दिल्ली के अवशेष' ने उसे एशियाटिक सोसाइटी का सदस्य बना दिया। सन् 1868 में वे अपने बेटे के साथ इंग्लैंड गये। उनके बेटे को केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अध्ययन के लिए दाखिला मिला। वहाँ उसने अंग्रेजी तरीके की पाठशालाओं और अंग्रेजी तालिम की जाँच की। विलायत में उनका बड़े-बड़े लोगों ने स्वागत किया। वहाँ उनकी बड़ी तारीफ की गई। सच है, विद्वान और शिक्षित लोगों को तो सारी दुनिया में सम्मान मिलता है।

भारत आकर उन्होंने अंग्रेजों की-सी पाठशालाएँ, मदरसे और कॉलेजों की स्थापना करनी चाही। वे अपने काम में सफल भी हुए। उन्होंने उन शिक्षा संस्थानों में

साहित्य के अलावा विज्ञान, गणित और राजनीति विषयो को भी पढ़ाने का इन्तज़ाम किया। उनके द्वारा किए गए काम को देखकर मुसलमान के कुछ मजहबियों ने उनके खिलाफ आवाजें उठाईं। उन मजहबियों का कहना था – “मुसलमानों के लिए तो कुरान नमाजों के अलावा कोई दूसरी तालिम ही नहीं हो सकती थी क्योंकि कुरान के अलावा वे किसी पर यक्रीन नहीं करते थे।” वे लोग सर सैयद को नफ़रत की निगाह से देखते थे। उनको अपनी जान के खतरे भी आए थे। फिर भी वे अपने कामों से मुँह नहीं मोड़ते थे। बाद में सार सेलाट जंग, हैदशबाद के निजाम, रामपुर के नवाब आदि मुसलमान विद्वानों ने शराफ़त से उनकी मदद करनी शुरू की। पटियाला के महाराज तथा अन्य हिन्दू नेताओं ने सर सैयद अहम्मद के उन कार्यों की भरसक प्रशंसा की।

उन्होंने उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ में अपनी पसन्द के ‘अलीगढ़ कॉलेज’ की स्थापना की।

सरकार ने उनके परिश्रम, त्याग और कोशिशों को नज़र में रखते हुए सन् 1866 में एक भव्य सभा के बीच शिक्षा व्यवस्थापक का पद उनके हवाले किया और के.सी.एस.आई. का खिताब भी हासिल किया।

कठिन शब्दों के अर्थ—

बुत	= मूर्ति
चार चाँद लग जाना	= शोभा वृद्धि करना।
यक्रीन	= विश्वास, भरोसा।
कौम	= जाति।
मिसाल	= उदाहरण।

पंजीयक	= रजिस्ट्रार, कुलसचिव।
होशियारी	= समझदारी।
वज़ह	= कारण।
सैन्य बगावत	= सिपाहियों का संघर्ष।
बख्शीश	= इनाम, उपहार।
औलाद	= सन्तान।
हालत	= अवस्था।
जुबान	= मुख।
तालिम	= शिक्षा।
मदरसा	= मुसलमानों की पाठशाला।
दाखिल करना	= प्रवेश करना।
तारीफ़ करना	= परिचय/प्रशंसा/बड़ाई करना।
मज़हबियों	= इस्लाम धर्म पर विश्वास रखनेवाले।
खिलाफ़	= विरुद्ध।
नफ़रत	= घृणा।
शराफ़त	= सज्जनता से।
हवाले किए	= प्रदान किए, सौंपे।
खिताब	= उपाधि।
हासिल की	= प्राप्त की।

प्रश्न-अभ्यास

1. किसके पैदा होने से भारत को चार चाँद लग गए ?
वह कहाँ और कब पैदा हुआ था ?
2. किस वजह से सर सैयद अहम्मद को क्रान्तिकारियों ने जान से मारने की कोशिश की थी ?
3. सर सैयद अहम्मद के समय भारत के मुसलमानों की स्थिति क्यों नाजुक थी ?
4. शिक्षा के संबंध में मुसलमानों के विचार व्यक्त कीजिए।
5. सर सैयद अहमद ने कौन-सी पुस्तक लिखी ? उस पुस्तक से उनको क्या फायदा मिला ?
6. मज़हबियों ने सर सैयद अहम्मद को नफ़रत की निगाहों से क्यों देखा ?
7. सर सैयद अहम्मद की जीवनी संक्षेप में लिखिए।
8. सर सैयद अहम्मद ने कौन -सी खिताब हासिल की ?
मणिपुर के किस सज्जन को वही खिताब प्रदान किया हुआ है ?

* * * * *

मूल कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह —

- क. संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थानों, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे।
- ख. स्वतन्त्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे।
- ग. भारत की संप्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे।
- घ. देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे।
- ङ. भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे, जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे, जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों।
- च. हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे।
- छ. प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं — रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दया भाव रखे।
- ज. वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे।
- झ. सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे।
- ञ. व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके।

निर्देश

अध्यापकों को चाहिए कि वे संविधान के भाग ४ क, अनुच्छेद-५१ क में उल्लिखित इन मूल कर्तव्यों को छात्रों को समझाएँ और कण्ठस्थ कराएँ।

राष्ट्रगान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंधु-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंग,
विंध्य-हिमाचल, जमुना-गंगा
उच्छल जलधि-तरंग,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय-गाथा।
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे।

